दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र

श्री महावीरजी

त्रैमासिक पत्रिका

• www.shrimahaveerji.com • online booking: www.mahaveerji.org

वर्ष-1 (संयुक्त अंक: 1-4) त्रैमासिक | सन् 2011-12 | अहिंसा परमो धर्म: | वीर निर्वाण सम्वत् 2537 | परिचय अंक

नमन !

तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामी जी के श्री चरणों में शत-शत नमन्। आपने अपूर्व कृपा कर मुझे सेवा का सुअवसर प्रदान किया है, इसके लिए मैं नतमस्तक हूँ।

यह दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी का परिचय अंक श्रद्धालुओं की सेवा में सादर समर्पित है। अतिशय क्षेत्र का स्वरूप अतुलनीय है। हमने यहाँ इस स्वरूप का कुछ अंश पाठकों की जानकारी व यात्रियों की सुविधा के लिए प्रथम बार इस पत्रिका के माध्यम से संयुक्तांक रूप में प्रस्तुत किया है।

आभार सहित,
जस्टिस एन. के. जैन
अध्यक्ष

अतिशय तीर्थ-क्षेत्र श्री महावीरजी :

यह सुविख्यात दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र 'श्रीमहावीरजी', राजस्थान (भारत) के पूर्वी अंचल में करौली जिले के हिण्डौन उपखण्ड में गम्भीर नदी के तट पर स्थित है। नई दिल्ली से मुम्बई को जाने वाली पश्चिमी-मध्य रेल्वे की बड़ी लाइन पर 'श्री महावीरजी' नामक रेल्वे स्टेशन स्थित है, जहां सभी प्रमुख रेलगाड़ियां ठहरती हैं। रेल्वे स्टेशन से श्री महावीरजी तीर्थस्थल करीब 7 किलोमीटर दूर है। यहां क्षेत्र कमेटी की ओर से यात्रियों के आने-जाने के लिए नि:शुल्क बस की व्यवस्था सदैव उपलब्ध है।

सड़क मार्ग से भी 'श्री महावीरजी' (वाया नादोती एवं वाया महुआ, हिण्डौन) अनेक नगरों से जुड़ा हुआ है :-

- जयपुर से 140 कि.मीटर दूर वाया नादोती
- आगरा से 170 कि.मीटर दूर
- दिल्ली से 300 कि.मीटर दूर

श्री महावीरजी से सीधी बस सेवायें जयपुर, अजमेर, पदमपुरा, अलवर, तिजारा, हस्तिनापुर, भरतपुर, आगरा, ग्वालियर, सोनागिरी, दिल्ली और मेरठ से जुड़ी हुई हैं।

मंदिर व अतिशय क्षेत्र का स्वामित्व एवं प्रबंध :

श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र का प्रबंध जयपुर दिगम्बर जैन पंचायत (समाज) एवं उसके मुकर्रर प्रबंधकों, भट्टारकों द्वारा होता था। वर्ष 1918 में भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्ति जी का आकस्मिक निधन हो जाने पर भट्टारक श्री चन्द्रकीर्ति जी को गद्दी पर बिठाया गया। वर्ष 1923 में जब गांव की जमा वसूली में कठिनाइयां आई तब दिगम्बर जैन जयपुर पंचायत ने राज्य से सहायता मांगी और पंचायत के आवेदन पर राज्य ने कोर्ट ऑफ वार्ड्स का प्रबन्ध किया। शनै: शनै: स्थितियों में सुधार आया। वर्ष 1930 में पुन: दिगम्बर जैन पंचायत, जयपुर ने राज्य सरकार से निवेदन कर कोर्ट ऑफ वार्ड्स का प्रबन्ध हटवाकर कर्मठ व अनुभवी दिगम्बर जैन व्यक्तियों की एक प्रबन्धकारिणी कमेटी का गठन कर इस क्षेत्र का प्रबन्ध सम्भाला । तब से अब तक प्रबन्धकारिणी कमेटी समस्त कार्यभार संभाले हुए है।

स्व. मुंशी प्यारेलाल जी कासलीवाल एवं स्व. रामचन्द्र जी खिन्दूका इस प्रबन्धकारिणी कमेटी के क्रमश: प्रथम अध्यक्ष एवं मंत्री बने। क्षेत्र के प्रति उनकी सेवायें बहुत ही उत्कृष्ट व चिरस्मरणीय रहीं। इस अतिशय क्षेत्र की प्रबन्ध व्यवस्था सम्पूर्ण भारत में विख्यात है। यह देश का

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

प्रबन्धकारिणी कमेटी
के सदस्य एवं वर्तमान पदाधिकारी

दिनांक 26 फरवरी, 2011 से

अध्यक्ष
न्यायाधिपति श्री नगेन्द्र कुमार जैन
पूर्व मुख्य न्यायाधिपति मद्रास एवं कर्नाटक हाईकोर्ट
पूर्व अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश मानवाधिकार आयोग व लोकायुक्त, शिमला,
पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग, जयपुर

उपाध्यक्ष
श्री राजकुमार काला
सीनियर एडवोकेट

उपाध्यक्ष
श्री नरेन्द्र कुमार पाटनी
आई.पी.एस. (सेवानिवृत्त)

मानद मंत्री
श्री प्रकाशचन्द्र जैन
आई.ए.एस.(सेवानिवृत्त)

संयुक्त मंत्री
श्री पूनमचन्द्र शाह
एडवोकेट

संयुक्त मंत्री
डॉ. हुकमचन्द सेठी
वरिष्ठ सर्जन, अधीक्षक
महावीर कैन्सर हास्पिटल, जयपुर

कोषाध्यक्ष
श्री महेन्द्रकुमार पाटनी
पूर्व उप निदेशक उद्योग विभाग
एवं समाज सेवी

सदस्यगण

श्री सुभद्रकुमार पाटनी
समाजसेवी

श्री तेजकरण डंडिया
शिक्षाविद् एवं
समाजसेवी

श्री भंवरलाल अजमेरा
चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट
एवं समाजसेवी

श्री पदमचन्द तोतूका
जौहरी एवं
समाजसेवी

श्री नरेशकुमार सेठी
आई.ए.एस.(सेवानिवृत्त)
पूर्व अध्यक्ष

श्री आर. के. जैन
अध्यक्ष
भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थ
क्षेत्र कमेटी, मुम्बई

श्री बलभद्र कुमार जैन
व्यापारी एवं
समाजसेवी

श्री नवीनकुमार बज
पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र
राजस्थान विश्वविद्यालय

श्री नानगराम जैन
जौहरी एवं
समाजसेवी

न्यायाधिपति
श्री मिलापचन्द जैन
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, दिल्ली हाईकोर्ट
व पूर्व लोकायुक्त, राजस्थान

डॉ. कमलचन्द सौगानी
पूर्व विभागाध्यक्ष
दर्शनशास्त्र विभाग
सुखा. वि.वि. उदयपुर

श्री हेमन्त कुमार सौगानी
एडवोकेट

श्री अशोक जैन
आई.ए.एस.

श्री शांतिकुमार जैन
आई.पी.एस.(सेवानिवृत्त)
सदस्य, लोक शिकायत आयोग एवं
पुलिस शिकायत प्राधिकरण, दिल्ली

न्यायाधिपति
श्री नरेन्द्र मोहन कासलीवाल
पूर्व न्यायाधिपति सुप्रीम कोर्ट

श्री कमलकुमार बड़जात्या
उद्योगपति
एवं समाजसेवी

न्यायाधिपति
श्री नरेन्द्रकुमार जैन
राज. उच्च न्यायालय

श्री देवेन्द्रकुमार जैन
उद्योगपति
एवं समाजसेवी

श्री अशोककुमार पाटनी
उद्योगपति
एवं समाजसेवी

श्री सुधांशु कासलीवाल
सीनियर एडवोकेट

श्री सुभाषचन्द जैन
जौहरी एवं
समाजसेवी

मैनेजर कार्यालय :
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
श्री महावीरजी (जिला करौली) राजस्थान -322220
दूरभाष : 07469-224323, 224339
www. shrimahaveerji.com
Online Room Booking : www.mahaveerji.org
e-mail: mahaveerjitrust@gmail.com

मंत्री कार्यालय :
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
कुन्द-कुन्द भवन परिसर, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी
सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-302004
दूरभाष : 0141-2385783, 2385784

सम्पादक मण्डल : न्यायमूर्ति एन.के. जैन, महेन्द्रकुमार पाटनी, डॉ. कमलचन्द सौगाणी, एम.एल. धोंकरिया के लिए राजू ग्राफिक आर्ट, अजमेरी गेट, जयपुर से मुद्रित।
प्रकाशक : प्रबन्धकारिणी कमेटी, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर (राजस्थान)

सुप्रसिद्ध व लोकप्रिय तीर्थक्षेत्र बना हुआ है। वर्तमान में यह दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र 'राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम व सोसायटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट' के अन्तर्गत पंजीकृत संस्था है। प्रबन्धकारिणी कमेटी सम्पूर्ण क्षेत्र के स्वामित्व व उसकी सम्पत्ति के रक्षार्थ और विकासार्थ पूर्णयता सचेष्ट है।

अतिशय क्षेत्र के लेखों की प्रतिवर्ष चार्टर्ड लेखाकार द्वारा ऑडिट की जाती है। क्षेत्र का प्रतिवर्ष विधिवत बजट बनाया जाता है तथा वार्षिक आय-व्यय का विवरण वार्षिक प्रतिवेदन में प्रकाशित किया जाता है।

दर्शन व आस्था स्थल : मूर्ति का उद्भव : श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र के प्रादुर्भाव की एक चमत्कारी जनश्रुति है। बताया जाता है कि लगभग 412 वर्ष पूर्व चांदन गांव में विचरण करने वाली एक गाय का दूध प्रतिदिन गम्भीर नदी के तट के पास एक टीले पर स्वत: ही झर जाता था। गाय कई दिनों तक बिना दूध के घर लौटने लगी तो गाय के मालिक चर्मकार को अनेक आशंकाओं व विकल्पों ने आ घेरा। एक रात उसको स्वप्न आया- गाय अपना दूध टीले में दबी हुई मूर्ति को अर्पित करती है। चर्मकार उस टीले पर गया और खुदाई की। खुदाई में परम दिगम्बर भगवान महावीर की पदमासन प्रतिमा निकली। महावीर बाबा का जयघोष लगा। लोग दर्शन हेतु उमड़ पडे। क्षेत्र मंगलमय हो उठा। बसवा निवासी श्री अमरचन्द जी बिलाला भी दर्शनार्थ आये। प्रतिमा से प्रभावित होकर उन्होंने वहां मंदिर का निर्माण करवाया। अपनी मनोकामना पूर्ण होने पर कई दानी महानुभावों ने समय-समय पर यात्रियों के ठहरने हेतु मंदिर के चारों ओर कमरों का निर्माण करवाया, जिसे आज **'कटला'** नाम से पुकारा जाता है। कटले में ही क्षेत्र की प्रबंधकारिणी कमेटी का प्रशासकीय कार्यालय भी है।

मुख्य जिनालय : मुख्य मंदिर कटले के मध्य स्थित है। पार्श्ववेदी में मूलनायक प्रतिमा भू-गर्भ से प्राप्त हुई भगवान महावीर की प्रतिमा विराजित की गई है तथा दाईं व बाईं ओर तीर्थंकर पुष्पदन्त एवं आदिनाथ की प्रतिमायें विराजित की गई। इसके अतिरिक्त अनेक कलात्मक वेदियों का निर्माण कराकर मूर्तियाँ विराजित की गईं। दानदाताओं और श्रद्धालुओं के सहयोग से मंदिर की बनावट, सुन्दरता और भव्यता में पर्याप्त वृद्धि हुई। मंदिर के शीर्ष पर लाल रंग के तीन गगन-चुम्बी शिखरों का निर्माण हुआ। स्वर्ण भित्ति चित्रांकन हुआ। परिक्रमा में कलात्मक चित्र उत्कीर्ण किये गये। शिखरों पर स्वर्ण कलश स्थापित होने से सुन्दरता में चार चांद लग गये।

मान स्तम्भ : मंदिरजी के मुख्य द्वार के सम्मुख संगमरमर से निर्मित 52 फीट ऊँचा आकर्षक मानस्तम्भ है, जिसके शीर्ष पर तीर्थंकरों की चार मूर्तियां विराजमान हैं, जिनका अभिषेक तीन वर्ष में एक बार होता है। अब 2013 में होना है।

मान स्तम्भ

चरण-चिह्न छत्री : भगवान महावीर की प्रतिमा के उद्गम स्थल पर एक कलात्मक छत्री निर्मित है, जिसमें भगवान के चरण-चिह्न स्थापित हैं। आज भी यहां दुग्धाभिषेक करने की होड़-सी लगी रहती है। यहाँ का चढ़ावा व सामग्री आज भी उसी चर्मकार वंशज को जाती है, जिसने प्रतिमा को भूमि से निकालने का सौभाग्य प्राप्त किया था। छत्री के चारों ओर उद्यान विकसित किया गया है।

चरण-चिह्न छत्री

महावीर स्तूप : उद्यान में चरण-चिह्न छत्री के सामने वाले भाग में 29 फीट ऊँचा **'महावीर स्तूप'** है, जिसके फलकों पर भगवान महावीर के उपदेश अंकित हैं और शीर्ष पर आकर्षक धर्मचक्र अंकित है। उल्लेखनीय है कि उक्त स्तूप भगवान महावीर के 2500 वें निर्वाणोत्सव के पावन उपलक्ष में निर्मित किया गया था। इस पर तत्कालीन सदस्यों के नाम अंकित हैं।

महावीर स्तूप

अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी स्थित कटला परिसर में चारों तरफ धार्मिक उपदेश व शिक्षाप्रद दोहे लिखे हैं।

भक्ति और श्रद्धा की शक्ति के द्वारा यहाँ के रज-कणों में ऐसे पावन तत्व मिल गये हैं कि यहां की रज को मस्तक पर लगाने मात्र से पाप नष्ट हो जाते हैं।

स्वागत कक्ष: कटले के बाहर प्रवेश द्वार के निकट निर्मित स्वागतकक्ष में यात्री विभिन्न धर्मशालाओं में आवासीय सुविधा एवं क्षेत्र सम्बन्धी समस्त जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। स्वागत कक्ष 24 घण्टे सेवारत रहता है।

निःशुल्क बस-सेवा : श्री महावीरजी रेल्वे स्टेशन एवं तीर्थ क्षेत्र के बीच क्षेत्र कमेटी द्वारा श्रद्धालुओं के लिए नि:शुल्क बस सेवा की व्यवस्था की हुई है जो सभी ट्रेनों के आवागमन के समय पर उपलब्ध रहती है।

निःशुल्क बस

भोजनशाला : यात्रियों को शुद्ध एवं सात्विक भोजन सुविधापूर्वक एवं उचित मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिए 'यात्री निवास' के पास भव्य भोजनशाला का निर्माण कराया गया है। इस भोजनशाला में एक साथ 400 यात्री भोजन कर सकते हैं। इस भोजनशाला में रात्रि भोजन का पूर्णत: निषेध है तथा जैन आचार-विचार का ध्यान रखते हुए शुद्ध छने हुए जल का उपयोग किया जाता है। आलू, मूली, गाजर आदि जमीकन्द का उपयोग नहीं किया जाता है। अष्टमी एवं चतुर्दशी पर हरी शाक सब्जी वर्जित हैं।

आदर्श तीर्थ-क्षेत्र की ओर बढ़ते कदम : प्रबन्धकारिणी कमेटी के सभी पूर्व अध्यक्षों, पूर्व मानद् मंत्रियों, पूर्व पदाधिकारियों व सभी सदस्यों ने इस क्षेत्र को आदर्श और अनुकरणीय तीर्थ स्थल बनाने के लिए सेवा व समर्पित भाव से अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यात्रियों के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं जैसे- पानी, बिजली, डाक-तार, टेलीफोन, बैंक, स्कूल, औषधालय, चिकित्सालय, वाचनालय, पुस्तकालय, धर्मशालाएं, बालोद्यान, पेट्रोल पम्प आदि। सड़कों का निर्माण, मार्गों पर बिजली व्यवस्था, बस स्टैण्ड के अलावा राजकीय सहयोग से गम्भीर नदी पर पुल का निर्माण, जयपुर से श्री महावीरजी पहुँचने के लिए गुढ़ाचन्द्र जी-नादौती मार्ग पर सड़क का निर्माण, साथ ही श्री महावीरजी में विद्युत निगम द्वारा 132 के.वी. ग्रिड स्टेशन का निर्माण, दूर संचार निगम द्वारा माइक्रोवेव टावर का निर्माण, रेल्वे द्वारा मुख्य-मुख्य ट्रेनों का स्टेशन पर रुकवाया जाना आदि प्रमुख कार्य शामिल हैं। लोकोपकारी और समाजोपयोगी कार्यों में जैन समाज सदैव अग्रणी रहा है। क्षेत्र कमेटी द्वारा पेयजल आपूर्ति हेतु दो उच्च जलाशयों का निर्माण कराया गया है तथा कई स्थानों पर सार्वजनिक प्याऊ भी संचालित है। क्षेत्र में बिजली आपूर्ति हेतु अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं के अलावा उच्च क्षमता के जनरेटर सेट्स भी लगवाये गये हैं।

ध्यान केन्द्र

कटला परिसर : कटला परिसर के मध्य ही तीर्थंकर महावीर स्वामी का मुख्य जिनालय सुस्थापित है। वर्तमान में जहाँ भगवान की मूलनायक प्रतिमा विराजमान है, उसके नीचे की मंजिल में ही लाल पाषाण से निर्मित प्राचीन कलात्मक मंदिर है। इस स्थल की सफाई कराकर इसे ध्यान केन्द्र के रूप में विकसित किया गया है। ध्यान केन्द्र में भगवान महावीर का एक विशाल चित्र शोभायमान है। 1998 में स्थापित ध्यान केन्द्र में बहुमूल्य रत्न प्रतिमाओं का अद्वितीय संकलन आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है। ये प्रतिमाएँ धर्मानुरागी जयपुर के पंसारी परिवार द्वारा भेंट की गई हैं।

यात्रियों की सुविधा के लिए कटला परिसर में चारों ओर डीलक्स कमरों में सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। कटले में ही क्षेत्र की प्रबन्धकारिणी कमेटी का प्रशासनिक कार्यालय, प्रबन्धक कार्यालय, पुस्तकालय एवं वाचनालय, उपभोक्ता भण्डार, बर्तन व बिस्तर भण्डार, पूजा सामग्री स्थल, स्नानगृह, टॉयलेट कक्ष तथा एस.टी.डी/पी.सी.ओ. सेन्टर कक्ष स्थित हैं इनके अलावा कटले के पश्चिमी भाग में 'कुन्द-कुन्द निलय' नाम से एक सुसज्जित आवासगृह निर्मित किया गया है। कटले में ही कमेटी की ओर से सुरुचि जलपानगृह 'न लाभ न हानि' के आधार पर संचालित है, ताकि यात्रियों को चाय-नाश्ता शुद्धता के साथ उचित मूल्य पर उपलब्ध हो सके।

जलपान गृह

यात्रियों को प्रक्षाल हेतु स्नान करने एवं धोती-दुपट्टा पहनने में किसी प्रकार की असुविधा न हो, इस हेतु कमेटी ने सुविधायुक्त पूजा-स्नानगृह का निर्माण करवाया है। ऐसा स्नानगृह साधारणत: अन्य तीर्थ क्षेत्रों में देखने को नहीं मिलता।

आवासीय सुविधाएँ : कटले में स्थित आवासीय सुविधाओं में चरण-चिह्न छत्री धर्मशाला एवं 'कुन्द-कुन्द निलय' के अलावा कमेटी द्वारा सभी सुविधाओं से युक्त डोरमेट्रीज के रूप में विकसित 'यात्री निवास' का निर्माण कराया गया है, जिसमें एक साथ 1000 यात्री ठहर सकते हैं।

सेठ सन्तलाल गोधा दिल्लीवालों द्वारा निर्मित 'वर्धमान धर्मशाला' पिछले कुछ वर्षों से क्षेत्र की प्रबन्धकारिणी कमेटी द्वारा ही संचालित है। इसमें वातानुकूलित कमरों एवं एयरकूल्ड कमरों के साथ-साथ सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

सेठ बधीचन्द जी गंगवाल, जयपुरवालों द्वारा निर्मित 'सन्मति' धर्मशाला को आधुनिक सुविधायुक्त बना दिया गया है। इसके अलावा मुख्य बाजार में अनेक श्रेष्ठियों के सहयोग से निर्मित कमरों व धर्मशालाओं में सेठ बन्जीलाल ठोलिया, जयपुरवालों की धर्मशाला, दिगम्बर जैन जैसवाल आगरावालों की धर्मशाला, सेठ लक्ष्मीचन्द जी मनोहरलाल जी जैन सर्राफ रेवाड़ीवालों की धर्मशाला तथा रोहतकवालों की धर्मशाला में भी पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध हैं।

चलती ट्रेन से भगवान के दर्शन : रेल्वे स्टेशन के प्लेटफार्म पर कत्थई रंग के ग्रेनाइट पत्थर से बने अत्यन्त मनोहर कलापूर्ण और आकर्षक स्तम्भ के बीच क्रिंकल ग्लास से जड़ित भगवान महावीरजी का चित्र शोभित है, जिसके दर्शन यात्रियों को चलती ट्रेन से भी हो जाते हैं।

श्री महावीरजी वार्षिक मेला : महावीर जयन्ती पर प्रतिवर्ष यहाँ विशाल मेला भरता है। यह मेला प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला दशमी से वैशाख कृष्णा द्वितीया तक भरता है, जो लक्खी मेला कहलाता है। राजस्थान के ग्रामीण अंचल के साथ ही पूरे भारत से जैन-अजैन श्रद्धालु मेले में भाग लेते हैं और मूलनायक भगवान श्री महावीर की मूंगावर्णी प्रतिमा के दर्शन कर धन्य होते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य अलौकिक मनोज्ञ प्रतिमाओं के दर्शन का भी लाभ मिलता है। मेला स्थल पर मीणा, गुर्जर, जाटव, अहीर, चर्मकार, जैन-अजैन सभी जाति - विरादरी के श्रद्धालुओं की उपस्थिति देखने को मिलती है। कई भक्तजन तो मीलों दूर से साष्टांग कनक दण्डवत करते हुए आते हैं और भगवान के समक्ष मनोकामनाएं लेकर श्रद्धासुमन चढ़ाते हैं। मेले की व्यवस्था में श्री वीरसेवक मण्डल, जयपुर का सहयोग लिया जाता है।

अपूर्व सहस्राब्दी समारोह का आयोजन : सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य 108 श्री विद्यानन्द जी मुनिराज से प्रेरणा व आशीर्वाद प्राप्त कर प्रबंधकारिणी कमेटी दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा भगवान महावीर की मूलनायक प्रतिमा का सहस्राब्दी समारोह (1 फरवरी से 8 फरवरी 1998 तक) आयोजित किया गया। उक्त समारोह का विषय दिग्दर्शन **'अभिषेक'** नामक स्मारिका में प्रकाशित कराया। उस अवसर पर कुल 1008 कलशों से प्रतिमा पर अभिषेक किया गया, जिससे देश के धर्मानुरागी एकता- एवं अखण्डता के सूत्र में निर्बाध रूप से बंध सके। उक्त समारोह-अवधि में पंचकल्याण प्रतिष्ठा समारोह के साथ-साथ अनेक धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन भी सम्पन्न हुए।

अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी में भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा के दर्शन करते हुए पूज्य आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज

साहित्यिक गतिविधि : क्षेत्र द्वारा वर्ष 1949 से संचालित 'साहित्य शोध विभाग' का विकसित रूप ही आज का **'जैन विद्या संस्थान'** है। यह संस्थान वर्तमान में निम्नलिखित कार्य सम्पन्न करता है :-

1. जैन धर्म-दर्शन की शोधपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन।
2. पत्राचार के माध्यम से जैन धर्म एवं संस्कृति का अध्ययन-अध्यापन।
3. जैन संस्कृति पर लिखी गई शोधपूर्ण पुस्तक पर रुपये 31,001/- का महावीर पुरस्कार व रुपये 5,001/- का 'ब्र. पूरणचन्द रिद्धिलता पुरस्कार' प्रदान करना।

इस संस्थान के अन्तर्गत 1988 में **'अपभ्रंश साहित्य अकादमी'** की स्थापना की गई, जिसमें निम्नलिखित कार्य सम्पन्न होते हैं :-

1. जैन संस्कृति की प्राचीन भाषा प्राकृत व अपभ्रंश का पत्राचार के माध्यम से अध्ययन, अध्यापन। इनके पाठ्यक्रम राजस्थान विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त हैं।
2. प्राकृत- अपभ्रंश की पाठ्य-पुस्तकों व शोधपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन।
3. प्राकृत-अपभ्रंश के अध्ययनार्थियों को विभिन्न पुरस्कार प्रदान करना।
4. रुपये 21,001/- का 'स्वयंभू अपभ्रंश' पुरस्कार तथा 'धरसेनाचार्य प्राकृत पुरस्कार' शोधपूर्ण ग्रन्थों पर प्रदान किया जाना।

जैनविद्या संस्थान के अन्तर्गत सन् 2001 में जयपुर में **'महावीर दिगम्बर जैन पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र,'** की स्थापना।

1. पाण्डुलिपियों का आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से निरोधात्मक व सकारात्मक संरक्षण किया जाना।
2. राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली से पाण्डुलिपियों के संरक्षण हेतु प्रतिवर्ष अनुदान प्राप्त होना।

दिनांक 26 फरवरी, 2011 को नव निर्वाचित पदाधिकारी व सभी सदस्य यात्रियों को अच्छी सुविधा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। **'आरक्षण ऑनलाइन'** की शुरुआत और साहित्यिक गतिविधियों की विस्तृत जानकारी हेतु वेबसाइट बनाने व अन्य कार्य का प्रयास चल रहा है।